हिन्दी विभाग
स्नातक द्वितीय (IV)
पत्र संख्या :- 03

* प्रयोगवाद की प्रवृत्तियाँ पर प्रकाश डालें। *

'वाद' के रूप में 'प्रयोग' शब्द का प्रचलन सन 1943 ई० में अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तारसप्तक' से माना जाता है। प्रयोगवाद की निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ इस प्रकार से हैं:-

1.) समसामयिक जीवन के प्रति आग्रह :- वर्तमान के साथ कदम मिलाकर चलना प्रयोगवादी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। इस धारा का कवि अतीत की चिन्ता छोड़ अपने समसामयिक जीवन को ही खुले नेत्रों से देखता है। आज की तेज गति की जिन्दगी, भौतिक एवं वैज्ञानिक प्रगति, सभी ने उसे अपनी ओर आकृष्ट किया है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक यंत्र की उनके साथ खींचती हुई मनुष्य की जिन्दगी सभी उसकी कविता के विषय है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी कवि ने अपनी कविताओं में समसामयिक जीवन का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। वर्तमान के साथ प्रतिबद्धता उसकी कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है, उसका युगबोध उसकी जागरूकता का सबसे

बड़ा परिचायक है।

2.) अहंप्रधान व्यक्तिवादी भावना:

और विद्रोह:-

आज का नया कवि एक ओर तो सड़ी गली प्राचीन परम्पराओं का विद्रोह कर नये रास्ते का अन्वेषी है दूसरी ओर वह अपनी ही धुन में मस्त और अहंवादी भी हो गया है वह संसार की प्रत्येक वस्तु को अपने अनुभव और अपनी भावनाओं के आदर्शों पर ही वह किसी की भी बात स्वीकार करने को तैयार नहीं स्वयं अपने पथ का निर्माण करने वाला भी स्वयं उस पर आगे बढ़ने वाला है स्वच्छंदता और निर्भीकता उसका स्वभाव है उसकी सारी काव्यसाधना आत्मविश्लेषण को ही आधार मानकर चलती है विविधता से युक्त वर्तमान जीवन को प्रत्येक कवि अपनी ही दृष्टि से देखना चाहता है। हम, हमने, मैं, मैंने की शैली उसकी प्रधान काव्य शैली है

3.) नग्न यथार्थ चित्रण:-

इस कविता में दूषित मनोवृत्तियों का चित्रण भी अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है जिस वस्तु को एक श्रेष्ठ साहित्यकार अरुचिकर, अश्लील, अग्राम्य और अस्वस्थ समझकर उसे साहित्य जगत से बहिष्कृत करता है प्रयोगवादी कवि उसी के चित्रण में गौरवानुभूति करता है काम वासना जीवन का अंग निश्चय ही बन गया है

किन्तु जब वह अंग न रहकर अंगी और साधन न रहकर साध्य बन जाती है, तब वह उसकी विकृति एक घोर भयानक विकृति के रूप में होती है। तार सप्तक की भूमिका में अज्ञेय जी लिखते हैं— "आधुनिक युग का साधारण व्यक्ति सेक्स सम्बन्धी वर्जनाओं से आक्रांत है। उसका मस्तिष्क दमन की गई सेक्स की भावनाओं से भरा हुआ है।"

4.) निराशावाद:— नयी कविता का कवि अतीत की प्रेरणा और भविष्य की उल्लासमयी उज्ज्वल आकांक्षा दोनों से ही परे है। उसकी दृष्टि केवल वर्तमान पर ही टिकी है। वह निराशा के कुहासे से पूर्णतः आवृत है। उसका दृष्टिकोण दृश्यमान जगत के प्रति क्षणवादी तथा निराशावादी दोनों ही उसके लिए आनेवाला कल निरर्थक है।

5.) अति बौद्धिकता:— आधुनिक की नई कविता में अनुभूति एवं रागात्मक की कमी है। इसके विपरीत इसके बौद्धिक व्यायाम की उछल कूद आवश्यकता से भी अधिक है। नया कवि पाठक के हृदय को तरंगित तथा उद्वेलित न कर उसकी बुद्धि को उहापोह के चक्रव्यूह में आबद्ध करके उसे परेशान करना चाहता है। हम कह सकते हैं कि नयी कविता में रागात्मकता के स्थान पर अस्पष्ट विचारात्मकता है और इसलिए उसमें साधारणीकरण की मात्रा का सर्वथा अभाव है।

6.) भविष्य के प्रति विश्वास की भावना :- प्रयोगवादी कवि अतीत के प्रति जितना ही निराशावादी है भविष्य के प्रति उतनी ही आशावादिता और आस्था से युक्त है। प्रयोगवादी कवि किसी राष्ट्र विशेष की परिधि में बँधकर अपने भाव नहीं व्यक्त करता है। उसके काव्य जगत में प्रवेश पाने वाली समस्याएँ समस्त विश्व की समस्याएँ है। उसकी वासना या कुण्ठा मनुष्य मात्र की वासना या कुण्ठा है।

7.) वेदना की अनुभूति :- प्रयोगवादि कवि एक साहसी की भाँति आपत्तियों और कष्टों का डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा देता है। आन्तरिक छटपटाहट, घुटन है। प्राण घातक स्थितियों से उलझना उसका स्वभाव-सा बन गया है। अखिल विश्व में घाव और इनसे होने वाले दर्द को वह व्यक्तिगत समझता है।

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र जैसे हिन्दी के अधिकारी आलोचक विद्वानों ने कविता की इस धारा को एक मात्र असफल बताया है और प्रयोगवादी बालकवियों की कटु आलोचना की है। बाजपेयी जी का कहना है कि "किसी भी अवस्था में यह प्रयोगों का बाहुल्य वास्तविक साहित्य सृजन का स्थान नहीं ले सकता है।"

प्रस्तुतकर्त्ता
कैलाश कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
मो० नं०-8292227184।

दिनांक
26/10/2020